International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-04-2025, Accepted: 27-05-2025, Published: 11-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 53-55

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में: दिनकर की विवाह की मुसीबतें

डॉ. आरती कुमारी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,यमुना नंद किशोर शुक्ला कॉलेज, बीआरएबीयू, मुजफ्फरपुर , बिहार, भारत

सारांश
प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी साहित्य जगत में यथा नाम तथा गुण जैसी कहावत को चरितार्थ करते हुए साहित्याकाश में सूर्य के समान तेजस्वी रचनाकार हैं। दिनकर ने पद्य के साथ–साथ गद्य में भी समभ्यस्त रूप से अपनी लेखनी चलाई है। 'विवाह की मुसीबतें' निबंध संग्रह के माध्यम से इन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त अनेकानेक समस्याओं को दृष्टिगत किया है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विवेच्य संग्रह उपयुक्त है। इसके माध्यम से प्रेम, विवाह, काम, नैतिकता, शिक्षा, लोकतंत्र, धर्म,विज्ञान, उपासना प्रभृति जैसे विषयों को सामाजिक दृष्टि से सैद्धांतिकी अवधारणाओं के रूप में विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः विवाह की मुसीबतें, पुरानी और नयी लोकतंत्ररू कुछ विचार, सामाजिक परिप्रेक्ष्य, काम–विज्ञान, स्त्री और पुरूष संबंध, नैतिकता, लोकतंत्र, आर्थिक स्वतंत्रता, धर्म और विज्ञान, प्रेम और संतानोत्पत्ति, गुरु–शिष्य परंपरा, प्रेम एक है या दो

हिन्दी साहित्याकाश में सदैव सूर्य के समान तेजस्वी और उर्जित रचना करने वाले रचनाकार है – रामधारी सिंह 'दिनकर'। दिनकर की प्रसिद्धि का मूल आधार उनका पद्य साहित्य था, लेकिन यदि इनके गद्य की बात करें, तो इनकी एक–एक रचनाएँ भारतीय समाज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में एक सार्थक दिशा प्रदान करती है। इन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा मनुष्य की सुसुप्तावस्था को आंदोलित किया है। इन्होंने चराचर जगत् के दृश्य–अदृश्य सभी विषयों को केन्द्र में रखकर निबंधों की रचना की है। स्वतंत्रतापूर्व और पश्चात् के भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रभावों का विस्तृत विवेचन इनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। साहित्य का अनुशीलन ही नहीं, अपितु परंपरा का अवलोकन भी इनकी रचनाओं का प्रतिपाद्य रहा है। दिनकर ने साहित्य, समाज, संस्कृति, विज्ञान, काम, प्रेम, राजनीति, धर्म, नैतिकता जैसे विषयों को अपनी रचना का आधार बनाया है। इन सभी बिन्दुओं में मुख्य रूप से समाज के साथ साक्षात्कार करने का प्रयत्न किया गया है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दिनकर का निबंध संग्रह 'विवाह की मुसीबतें' का विस्तृत विवेचन एवं विश्लेषण करने का एक विनम्र प्रयास किया गया है। हमारे समाज में ऐसा माना जाता है कि जिस स्त्री में पुरुष का गुण है वह कुलटा है, प्रत्युत् ठीक इसके विपरीत दिनकर ने लिखा है – ''जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, वह अधूरा है एवं जिस नारी में पुरूषत्व नहीं, वह भी अपूर्ण है"।

"मही माँगती प्राण–प्राण में सजी कुसुम की क्यारी
स्वप्न–स्वप्न में गूँज सत्य की, पुरूष–पुरूष में नारी।"[1]

सामाजिक दृष्टि से 'विवाह की मुसीबतें' एक परिपूर्ण और आदर्श निबंध की श्रेणी में परिगणित है। भारतीय समाज में स्त्री और पुरूष को गाड़ी के दोपहिया माना गया है। एक के बिना दूसरे की परिकल्पना अधूरी है। इसी संबंध को दिनकर ने निबंधों के माध्यम से विवेचन किया है। विवाहोपरांत स्त्री–पुरूष के परस्पर संबंधों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया है। समाज में नारी के प्रति भावनाओं का भी विवेचन किया गया। साहित्य के माध्यम से ही हम समाज का सच्चा प्रतिबिंत देख पाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी कहा है – 'साहित्य समाज का दर्पण है'। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दिनकर की रचना 'विवाह की मुसीबतें' की पड़ताल बहुप्रतिक्षित है।

1. विवाह की मुसीबतें

भारतीय समाज में विवाह को एक अटूट बंधन माना गया है। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में यदि हम देखें तो विवाह महज एक समझौता मात्र बनकर रह गया है। पुरूषों की दृष्टि में स्त्री का कोई अस्तित्व मात्र नहीं रह गया है। जिसके कारण आज विवाह जैसे पवित्र बंधन भी केवल और केवल देह की यात्रा मात्र बनकर रह गया है। आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यदि हम विवाह की मुसीबतें का अनुसंधान करने का प्रयास करते हैं, तो हम पाते कि मनुष्य के भीतर पर्याप्त असंतोष की भावना, सभ्यता के विकास के कारण स्त्री और पुरूष में असंतोष की भावना व्याप्त होती चली गई, जिसके परिणमास्वरूप विवाह एक अटूट बंधन न बनकर मुसीबत बन गया। ''सभ्यता जब सीमित था, विवाह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखमय और संतोषपूर्ण थे। सभ्यता ज्यों–ज्यों प्रगति करती गई, पत्नियाँ अपनी कठिनाइयों से अधिकाधिक अवगत होती गई हैं और शिक्षा का आलोक एवं चिन्तन की शक्ति, ज्यों–ज्यों विस्तृत होती है, विवाह की असफलताओं की कहानियाँ उतनी ही बढ़ती जाती है।''[2]

हमारे समाज में विवाह को केवल और केवल काम मात्र ही मानते हैं। लोगों की ऐसी धारणा होती है कि केवल काम की इच्छापूर्ति के लिए ही स्त्री और पुरूष का विवाह होता है। लेकिन सच कहा जाए तो विवाह में एक मुसीबत कहीं न कहीं कामलिप्सा भी है। लेकिन अनुसंधान में ऐसा पाया गया है कि कहीं–न–कहीं जो पति पत्नी काम क्रीड़ा में संतुष्ट है वहाँ विवाह–विच्छेद कम होता है। यह एक प्रश्न बनकर आज के समाज में खड़ा है क्या विवाह से उत्पन्न मुसीबतें एकमात्र काम के कारण पैदा होती है? इसके संबंध में दिनकर ने लिखा है, ''यह भी क्या सच है कि विवाह से जितनी मुसीबतें पैदा होती है, उन सबका एकमात्र कारण काम है? काम–विज्ञान पर खोज करनेवाले पंडितों ने बताया है कि जहाँ पति–पत्नी काम के धरातल पर संतुष्ट हैं, वहाँ कलह होने पर भी बातें विवाह–विच्छेद तक कम पहुँचती है।''[3]

हमारे समाज में केवल विवाहोपरांत ही नहीं बल्कि विवाह पूर्व भी लड़की और लड़का के लालन–पालन में भी अंतर किया जाता है। नारी को सदैव रक्षणिय माना जाता है। उसे वृक्ष की भाँति बढ़ने की स्वतंत्रता नहीं प्रदान की जाती है, अपितु उसे लता की भाँति परजीवी बनाया जाता है। जिसके कारण नारी का मानसिक विकास उस स्तर पर तक नहीं हो पाता है, जहाँ वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों का खुलकर विरोध कर सके। फलस्वरूप

वह कुंठा, पीड़ा और खिन्नता जैसे मनोरोगों का शिकार बन जाती है।

''नारी का लालन–पालन माता–पिता इस भाव से करते हैं, मानो अपना बोझ उसे आप नहीं उठाना है, मानो उसकी सारी सार्थकता लता बनकर वृक्ष को छा लेने में है। किन्तु विवाह के बाद जब वृक्ष ऊँघने लगता है, तब लता को विफलता–बोध की पीड़ा महसूस होती है और उसका मन खिन्न होने लगता है।''[4]

'विवाह की मुसीबतें' का सामाजिक दृष्टि से अध्ययन एवं विश्लेषण करने पर प्राप्त परिणाम हम समाज में स्त्री विषयक भावना और विवाहोपरान्त स्त्री के ह्रदय में जागृत भावनाओं का भी विस्तृत पड़ताल कर पाते हैं। नारी का स्वभाव होता है वह बुद्धि की अपेक्षा मन से चलती है। हमारे समाज में शिक्षित–शिक्षित स्त्रियाँ भी मन से चलती है। जिसका पुरूष के दृष्टि में कोई अस्तित्व मात्र नहीं रह जाता है। वह जीवन को भावनात्मक स्तर पर देखना चाहती है। स्त्री पल–पल अपने रचाव बनाव के लिए पुरूष की एक दृष्टि मात्र के लिए प्रशिक्षित रहती है। इसके संबंध में दिनकर ने लिखा है – ''बड़ी–से–बड़ी नारी भी बुद्धि से कम, भावना से अधिक परिचालित होती है। वह सोचती है कम, सपने अधिक देखना चाहती है और सपने उसे कहते हैं, ''नारी, तेरी सारी सार्थकता पुरूष को लेकर है। तेरी सारी जिंदगी इन्तजारी में कटेगी और हर बात के लिए तुझे पुरूष का मुँह जोहना पड़ेगा ५ और मुँह जोहना केवल रोटी और कपड़े के लिए ही नहीं, बल्कि यह जानने के लिए भी कि तू सुन्दर है या नहीं, कि तेरा बनाव–सिंगार पसंद किया जाता है या नहीं, कि तेरे प्रेम का अर्ध्य व्यर्थ है अथवा उसे कोई स्वीकार भी करता है।'' नारी सचमुच ही प्रतीक्षा की साकार प्रतिमा होती है।[5]

हमारे समाज में व्याप्त कुीरतियों पर विचार करते हुए दिनकर नारियों की आर्थिक स्वतंत्रता का प्रबल समर्थन करते हैं। क्योंकि आर्थिक परतंत्रता नारियों के लिए बहुत ही भयावह और कष्टपूर्ण है। उन्होंने कहा है – ''कहने का हर पति अपनी पत्नी को रानी कहता है, किन्तु आर्थिक पराधीनता के कारण पत्नी मन–ही–मन खूब समझती है कि रानी उसका ऊपरी नाम है। असल में वह पुरूष की रानी नहीं, सेविका है, इच्छाओं की दासी और काम की गुलाम है। कहने को तो यह भी कहा जाता है कि पति और पत्नी के बीच सम्बन्ध वही होना चाहिए, जो आत्मा और शरीर के बीच है। किन्तु सच्चाई यह है कि आत्मा जब अलग होती है, तब लाश दो नहीं, एक ही रह जाती है।''[6]

2. प्रेम एक है या दो

हमारे समाज में नर और नर के बीच का प्रेम प्रासंगिकता होता जा रहा है जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती जा रही है। आज के समाज में संतानोत्पत्ति को लेकर जो भावनाएँ लोगों के मन में विकसित हो रही है। इसी को दिनकर ने दर्शाने का प्रयास किया है। दिनकर ने प्लेटो की रचना 'सम्पोजियम' के प्रसंगों को उद्धृत करते हुए प्रेम एक है या दो? विषय के सामाजिक परिप्रेक्ष्य को विस्तृत रूप से विवेचन किया है।

"प्रेम एक नहीं, दो है। हीन कोटि का प्रेम वह है, जो नर और नारी के बीच होता है। प्लेटो के अनुसार, इस प्रेम का एकमात्र लक्ष्य संतानोत्पत्ति है। किन्तु इससे अधिक श्रेष्ठ प्रेम वह है, जो नर को नर से होता है। रचना, सर्जन अथवा उत्पादन तो इस प्रेम का भी ध्येय है, किन्तु जब दो पुरूष आपस में प्रेम करते हैं, तब उस प्रेम से बच्चे नहीं जनमते, बल्कि कला, ज्ञान और दर्शन उत्पन्न होते हैं।''[7] साथ ही उपरोक्त संदर्भ के आलोक में सिम्पोजियम के भिन्न–भिन्न संदर्भों के माध्यम से रेखांकित किया गयाहै। ''प्रत्येक प्रकार के संबंध में वासना निंद्य है। श्रेष्ठ प्रेम दो स्वरूपवान और मेधावी नरों के बीच उत्पन्न होने वाला वह मधुर संबंध है, जिससे दोनों को आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त होती है और दोनों कला, ज्ञान एवं आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में उत्तरोत्तर ऊपर उठते जाते हैं। सुकरात को प्लेटो ने ऐसे प्रेम की सकार प्रतिमा माना है।''[8]

प्रस्तुत संदर्भों के माध्यम से स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण को उजागर किया गया है। इस संग्रह की रचना सन् 1974 ई० में हुई थी, तब से लेकर आज तक इस प्रकार के मंतव्य हमारे समाज में प्रासंगिक है। आज भी पुरूष स्त्रियों को अपनी सफलता के मार्ग का बाधक ही मानते हैं। आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी स्त्री और पुरूष के मेल को महज काम के धरातल तक ही सीमित माना गया है।

प्रस्तुत संदर्भ के ठीक विपरीत दिनकर ने सूफी परंपरा के मत का उल्लेख करते हुए लिखा है ''इश्कमिजाजी इश्कहकीकी का सोपान है। अर्थात् शरीरिक सोपान पर प्रेम करते–करते मनुष्य आध्यात्मिक सोपान की ओर बढ़ने लगता है"।

शरीर प्रेम की जन्मभूमि है और जैसे सब लोग जन्मभूमि से प्यार करते हैं, वैसे ही प्रेम को भी अपना जन्मभूमि अन्य सभी भूमियों से अधिक पसंद है–

"प्रेम की मादकता का भेद
छिपा रहता भीतर मन में,
काम तब भी अपना मधु वेद
सदा अंकित करता तन में।''[9]

3. पुरानी और नई नैतिकता

पुरानी और नई नैतिकता के माध्यम से भारतीय समाज में नैतिकता के परिवर्तन को रेखांकित किया गया है। इसके माध्यम से काम (सेक्स) संबंधी प्राचीनकाल और वर्तमान काल की मान्यताओं का विवेचन किया गया है। पुरानी नैतिकता के माध्यम से वेश्यावृति के दोषों को भी रेखांकित किया है। प्रेम को सेक्स से उच्च तत्त्व माना है। नर और नारी के बीच प्रेम के महत्व को उजागर किया गया है। ''नर–नारी मिलन में सबसे अधिक महत्त्व प्रेम का है। अतएव नर नारियों के बीच वह गम्भीर प्रेम अधिक–से–अधिक विकसित होना चाहिए, जिससे आलिंगन–समुद्र में दोनों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पूर्णरूप से निमग्न हो जाए और उस मिलन से दोनों के व्यक्तित्व अधिक पूर्ण, अधिक समृद्ध और अधिक सुखद बनते चले जाएँ।''[10]

4. शिक्षा तब और अब

सामाजिक दृष्टि से शिक्षा और मातृभाषा की उपयोगिता को रेखांकित किया गया है। पौराणिक काल में शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त था। तब गुरू शिष्य की परम्परा का विधान था। धीरे–धीरे शिक्षा के स्तर और उसके नैतिक मूल्यों में ह्रास उत्पन्न होने लगा। हमारे समाज में शिक्षकों का सम्मान होने लगा। इसी को रेखांकित करते हुए दिनकर ने लिखा है – ''पढ़ाने का काम सबसे सीधा–सादा और मेमने का काम था। अब वह भी खतरनाक हो गया। शिक्षकों और छात्रों के संबंध बेतरह बिगड़ गए हैं। कॉलेज अब शिक्षकों और छात्रों की संस्था नहीं रहे, छात्र बनाम शिक्षकों की संस्था बन गए हैं। शिक्षा की नीति अब वे नहीं चलायेंगे, जो विशेषज्ञ हैं। वह उनके चलाए चलेगी, जो पढ़ने आते हैं। 'शिक्षा का स्तर और नीचा करो, और नीचे करो; 'परिक्षाओं को और आसान करो, और आसान करो'– ये नारे हैं, जो नौजवान के मुख से रोज निकल रहे हैं। शिक्षा का स्तर अभी भी बहुत नीचा है। अगर वह और नीचे लाया गया, तो बोकारों की फौज बढ़ेगी और उनकी फौज भी, जिन्हें कोई भी काम सौंपा नहीं जा सकेगा।''[11]

प्रस्तुत अंश से हमें यह ज्ञात होता है कि आज हमारे समाज में शिक्षा का स्तर किस हद तक गिर चुका है। जहाँ प्राचीनकाल में गुरु–शिष्य परंपरा के लिए हमारा देश विश्व प्रसिद्ध था, वहीं

वर्तमान काल में शिक्षा व्यवस्था के गिरता स्तर एक सोचनीय स्थिति बन गई है।

5. धर्म और विज्ञान

धर्म और विज्ञान के माध्यम से हमारे समाज में व्याप्त धर्म और विज्ञान के बीच के अंर्तद्वंद्व को उजागर किया गया है। प्राचीनकाल में हमारे समाज में धर्म को अधिक महत्व दिया गया था। लेकिन धीरे–धीरे विज्ञान का आविष्कार हुआ, लोगों की बुद्धि का विकास हुआ और वे विज्ञान के महत्व को जानने और समझने लगे। साथ ही, इसके प्रभावों से भी रू–ब–रू हुए। धर्म और विज्ञान शीर्षक में दिनकर ने धर्म के माध्यम से विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की चेष्टा किया है। धर्म और विज्ञान दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान सृष्टि के स्थूल अंगों और उसके ढांचों के ज्ञान का पर्याय है। इसके संबंध में विज्ञान ने कोई पूर्वाग्रह पैदा नहीं किया है।

''पूर्वाग्रह के अभाव में हम यह मानने को स्वतंत्र हैं कि सौन्दर्य के प्रति हमारी रागात्मक वृत्ति और ईश्वर के साथ एकीभूत होने की हमारी रहस्यात्मक कल्पना बिल्कुल निस्सार नहीं है। सम्भव है, इन वृत्तियों का भी कोई स्पष्ट लक्ष्य सृष्टि के भीतर प्रच्छन्न हो। अभिनव विज्ञान ने सृष्टि विषयक जिस नवीन कल्पना को जन्म लेने की छूट दे दी है, उसमें केवल गणितज्ञ ही नहीं रहस्यवादी सन्त और कलाकार भी रह सकते हैं।''[12]

6. लोकतंत्र – कुछ विचार

लोकतंत्ररू कुछ विचार के माध्यम से प्रजातंत्र के गुण एवं दोषों का रेखांकन किया गया है। हमारे समाज में व्याप्त प्रजातंत्र में सरकार के निर्माण में जनता का मत सर्वोपरि माना जाता है, इस पर विशेष बल दिया गया है। जनता के चरित्र के अनुसार ही प्रजातंत्र में सरकार बनती है। ''प्रजातंत्र के अंदर सरकार जनता के चरित्र के अनुसार बनती है और उसी के अनुसार चला भी करती है। इसीलिए जनता जैसी होती है, सरकार भी वैसी ही बनती है।''[13]

प्रजातंत्र में समरसता का भाव होता है। यह इसकी सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती है। इसमें चुनाव के काल में सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी विशेष माना जाता है। प्रजातंत्र में लोगों में बादशाहत की भावना उत्पन्न होती है।

''प्रजातंत्र की एक खूबी यह भी है कि उसके कारण जनसाधारण के जोश और दर्प में वृद्धि होती है। पाँच साल बाद ही सही, मगर चुनाव के समय उसकी पूछ तो होती है''। प्रजातंत्र के प्रचार के कारण गरीब–से–गरीब आदमी के भीतर भी यह भाव पैदा हो गया है कि मै गुलाम नहीं हूँ। व्यवहार में राष्ट्रपति चाहे बड़े लोग ही होते हों, किन्तु सिद्धान्ततः कोई भी व्यक्ति राष्ट्रपति बनने की बात सोच सकता है।''[14]

विवाह की मुसीबतें संग्रह की समीक्षा सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पूर्णतः सटीक और सार्थक है। विवेच्य संग्रह में दिनकर ने केवल किसी विषय विशेष पर विचार नहीं किए हैं वरन् समाज में व्याप्त विविध विषयों का अवलोकन किया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि ''विवाह की मुसीबतें'' निबंध संग्रह सामाजिक दृष्टिकोण से समीचिन है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह निबंध संग्रह विचारणीय है। संग्रह की भूमिका में स्वयं दिनकर ने लिखा है– ''कविता, धर्म, विज्ञान और राजनीति पर चिंतन करने में मुझे जो आनन्द आता है, वही आनन्द मुझे काम की समस्या पर भी सोचने में मिलता है। काम का यौन नैतिकता से संबंध है, काम का गृहस्थी से संबंध है। काम से प्रेरणा पाकर मनुष्य ऊँचा उठता है और काम के कारण ही बहुत–से लोगों को आत्महत्या करनी पड़ती है। घर छोड़कर वैराग्य लेना पड़ता है। इसलिए काम चिंतन करना केवल चिंतन का रस लेने के लिए आवश्यक नहीं है। वह अधिक आवश्यक नहीं है। वह अधिक आवश्यक इसलिए हो गया है कि बदली हुई परिस्थितियों में काम का उचित संबंध क्या हो, इसका हमें अनुसंधान करना है।''[15]

निष्कर्ष

रामधारी सिंह श्दिनकरश का निबंध संग्रह श्विवाह की मुसीबतेंश भारतीय समाज की पारंपरिक एवं आधुनिक मान्यताओं पर गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इस संग्रह में विवाह, प्रेम, काम, नैतिकता, शिक्षा, लोकतंत्र, धर्म, और विज्ञान जैसे विविध विषयों पर उनके विचार सामाजिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किए गए हैं। दिनकर ने स्पष्ट किया है कि भारतीय समाज में विवाह केवल शारीरिक संबंधों का प्रतीक नहीं, बल्कि एक नैतिक और सामाजिक बंधन है। वे विवाह के संबंध में यह विचार रखते हैं कि जब तक स्त्री और पुरुष दोनों के बीच सम्मान और परस्पर समझ नहीं होती, विवाह में समस्याएं उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त, उनका मानना है कि समाज में नारी की स्थिति की जड़ें गहरी हैं और यह समस्याएं लैंगिक असमानता, परंपरा, और सामाजिक संरचना से प्रभावित हैं।

दिनकर मानते हैं कि शिक्षा का मूल उद्देश्य आत्मिक एवं बौद्धिक उन्नति होना चाहिए, न कि केवल व्यावसायिक सफलता। वे आधुनिक शिक्षा पद्धति पर भी सवाल उठाते हैं, जो नैतिकता और सामाजिक दायित्वों से विमुख हो रही है। साथ ही, वे लोकतंत्र की प्रासंगिकता और उसकी खामियों पर भी प्रकाश डालते हैं, विशेष रूप से समाज की सामूहिक चेतना और जनता के चरित्र के अनुसार लोकतंत्र के विकास के पहलुओं पर।

इस निबंध संग्रह से यह निष्कर्ष निकलता है कि दिनकर का सामाजिक दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक, यथार्थवादी, और उदार है। वे मानते हैं कि समाज में नैतिकता, प्रेम, और विवाह जैसे विषयों का अध्ययन एवं संशोधन आवश्यक है ताकि समाज की संरचना मजबूत और एकात्म हो सके।

सन्दर्भ सूची

1. नंदकिशोर नवल और तरूण कुमार (सं०), दिनकर रचनावली (खण्ड–8), पृ०–124, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज (उ०प्र०) 2011
2. उपरिवत्, पृ०–165
3. उपरिवत्, पृ०–165
4. उपरिवत्, पृ०–167
5. उपरिवत्, पृ०–167–168
6. उपरिवत्, पृ०–174
7. उपरिवत्, पृ०–155
8. उपरिवत्, पृ०–155–56
9. उपरिवत्, पृ०–159
10. उपरिवत्, पृ०–136
11. उपरिवत्, पृ०–36
12. उपरिवत्, पृ०–154
13. उपरिवत्, पृ०–224
14. उपरिवत्, पृ०–229
15. नंदकिशोर नवल और तरूण कुमार (सं०), दिनकर रचनावली (खण्ड–9), पृ०–396, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज (उ०प्र०) 2011